EDU Journal of International Affairs and Research (EJIAR), ISSN: 2583-9993
Volume 5, Issue 1, January-March, 2026, Available at: https://edupublications.com/index.php/ejiar

सामाजिक जागरूकता लाने एवं सामुदायिक सहभागिता बढ़ाने में शिक्षक की भूमिका।

Uttam Kumar

D.A.V. College of Education Hassangarh Rohtak, (Haryana)

शिक्षक सामाजिक कल्याण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वे शिक्षा के माध्यम से व्यक्तिगत सशक्तिकरण और सामाजिक विकास को बढ़ावा देते हैं, जिससे शिक्षित व्यक्ति अर्थव्यवस्था में योगदान कर सकते हैं और बेहतर जीवन जी सकते हैं। इसके अतिरिक्त, वे कक्षा में समावेशी वातावरण बनाकर सामाजिक एकता और समावेशिता को बढ़ावा देते हैं, जिससे पूर्वाग्रह और भेदभाव कम होता है। शिक्षकों द्वारा करुणा, दयालुता और सामाजिक जिम्मेदारी जैसे मूल्यों को बढ़ावा देना, छात्रों को सामाजिक रूप से जागरूक और सक्रिय नागरिक बनने के लिए प्रेरित करता है। संक्षेप में, शिक्षक न केवल ज्ञान प्रदान करते हैं, बल्कि समाज के निर्माण में भी योगदान देते हैं, इसलिए शिक्षक दिवस पर उन्हें सम्मानित किया जाना चाहिए।

शिक्षक भावी पीढ़ियों के दिमाग और चरित्र को आकार देकर सामाजिक कल्याण को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वे न केवल ज्ञान प्रदाता हैं, बल्कि समाज में सकारात्मक बदलाव के लिए मार्गदर्शक, रोल मॉडल और उत्प्रेरक के रूप में भी काम करते हैं। शिक्षकों का प्रभाव कक्षा से परे जाकर समुदायों की समग्र भलाई और प्रगति में योगदान देते हैं। इस लेख में, हम सामाजिक कल्याण में शिक्षकों के महत्वपूर्ण योगदान का पता लगाएंगे। शिक्षक सामाजिक कल्याण में योगदान देने के प्राथमिक तरीकों में से एक शिक्षा के माध्यम से है। शिक्षा व्यक्तिगत सशक्तिकरण और सामाजिक विकास की कुंजी है। शिक्षक छात्रों को ज्ञान, आलोचनात्मक सोच कौशल और मूल्य प्रदान करते हैं, उन्हें जिम्मेदार बनाते हुए उनकी प्रोडक्टिविटी को पुष्ट करते हैं। शिक्षित व्यक्तियों को सार्थक रोजगार मिलने, अर्थव्यवस्था में योगदान देने और जीवन के विभिन्न पहलुओं में सोच-समझकर निर्णय लेने की अधिक संभावना होती है।

इसके अलावा, शिक्षा सामाजिक गतिशीलता को सक्षम बनाती है, गरीबी के चक्र को तोड़ती है और व्यक्तियों और उनके परिवारों के जीवन की समग्र गुणवत्ता में सुधार करती है। शिक्षक सामाजिक एकता और समावेशिता को बढ़ावा देने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। कक्षा में, छात्र विविध पृष्ठभूमियों, संस्कृतियों और अनुभवों से आते हैं। शिक्षक एक समावेशी और स्वागत योग्य वातावरण को बढ़ावा देते हैं। छात्रों को विभिन्न दृष्टिकोणों का सम्मान करना और उनकी सराहना करना सिखाता है। सहानुभूति और समझ का पोषण करके, शिक्षक पूर्वाग्रह और भेदभाव को कम करते हुए एक सामंजस्यपूर्ण और सहिष्णु समाज की नींव बनाते हैं। शैक्षणिक पाठों से परे, शिक्षक अपने छात्रों में करुणा, दयालुता और सामाजिक जिम्मेदारी जैसे मूल्य पैदा करते हैं। वे सक्रिय नागरिकता और सामुदायिक सेवा में संलग्नता को प्रोत्साहित करते हैं, छात्रों को समाज को वापस देने के लिए प्रेरित करते हैं। सामाजिक जिम्मेदारी की भावना का पोषण करके, शिक्षक अगली पीढ़ी को सामाजिक रूप से जागरूक व्यक्ति बनने के लिए प्रेरित करते हैं जो अपने समुदायों की बेहतरी के लिए सक्रिय रूप से काम करते हैं। कई प्रकार से एक अध्यापक सोशल वेलफेयर कार्यक्रम में अघोषित रूप से अपनी मजबूत भूमिका निभाते चले आ रहे हैं ऐसे में हमें चाहिए कि हम भी आने वाले शिक्षक दिवस पर शिक्षकों को शिक्षक दिवस की शुभकामनाएं अवश्य दें.

शिक्षक दिवस पर शिक्षकों को शिक्षक दिवस की शुभकामनाएं मात्र छात्रों को ही नहीं बल्कि उनके अभिभावक और समाज के हर व्यक्ति को देनी चाहिए आप कीसी बी माध्यम से एक प्यारा सा मैसेज अपने टीचर्स को समाज के लिए दिए गए योगदान को याद करते हुए भेज सकते हैं. एक शिक्षक मात्र सोशल वेलफेयर ही नहीं बल्कि राष्ट्र के निर्माण में भी अपना योगदान देते हैं. मनोविज्ञान, तंत्रिका विज्ञान और सामाजिक विज्ञान जैसे कई विषयों से वैज्ञानिक ज्ञान को अपनाते हुए, सामाजिक और भावनात्मक शिक्षा (एसईएल) की एक प्रतिष्ठित विरासत है। एसईएल में बच्चों को सामाजिक परिस्थितियों में उचित व्यवहार करने के लिए आवश्यक आवश्यक योग्यताएँ और दृष्टिकोण शामिल हैं। यह सहयोग और दूसरों के साथ मिलकर रहने, भावना विनियमन कौशल, सहानुभूति, जिम्मेदार निर्णय लेने और संबंध कौशल के कौशल से संबंधित है। बर्मन के अनुसार, ये कौशल 'सामाजिक चेतना के विकास' और राष्ट्र की उत्पादकता में वृद्धि के लिए मौलिक हैं।

यह धारणा कि शिक्षा में समग्र दृष्टिकोण के माध्यम से स्कूल बच्चों के सामाजिक और भावनात्मक कल्याण को बढ़ावा देने में एक मौलिक भूमिका निभा सकते हैं, दुनिया भर में बढ़ती मान्यता प्राप्त कर रही है। शिक्षा के लिए एक समग्र दृष्टिकोण छात्रों के शैक्षणिक निर्देश से परे है और इसका उद्देश्य प्रत्येक बच्चे के संज्ञानात्मक, भावनात्मक, सामाजिक, शारीरिक और आध्यात्मिक विकास को शामिल करना है। विशेष रूप से, छात्र कल्याण और सीखने के लिए पूरे स्कूल के दृष्टिकोण को शैक्षिक सेटिंग्स के भीतर सामाजिक और भावनात्मक सीखने के प्रभावी समावेश के लिए महत्वपूर्ण माना जाता है। स्कूलों में SEL को बढ़ावा देने के माध्यम से एक समग्र दृष्टिकोण के लिए प्रतिबद्धता में स्कूल के लोकाचार, संगठन, प्रबंधन संरचनाओं, संबंधों, भौतिक वातावरण, साथ ही साथ पढ़ाए जाने वाले पाठ्यक्रम को संशोधित करना शामिल होगा, ताकि स्कूली जीवन का अनुभव उन सभी के स्वास्थ्य के लिए अनुकूल हो जो वहां सीखते और काम करते हैं। इस तरह के दृष्टिकोण का निकटतम लक्ष्य सभी छात्रों को अपने स्वयं के निर्देशित और सहयोगी सीखने में सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करना है, जबकि

स्कूल समुदाय के भीतर सभी स्तरों पर सकारात्मक संबंधों के विकास को बढ़ावा देना है। इसके अलावा, इस दृष्टिकोण का मुख्य जोर स्कूल परिवेश में छात्रों के सामाजिक, भावनात्मक और संज्ञानात्मक कौशल के विकास को समर्थन प्रदान करना है, जहां इन कौशलों का निरंतर विकास और अनुप्रयोग किया जाता है।

शैक्षिक सेटिंग्स के भीतर, कक्षा शिक्षक बच्चों के सामाजिक, भावनात्मक और संज्ञानात्मक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, क्योंकि वे कक्षा के सामाजिक और भावनात्मक माहौल को ढालते हैं। सामान्य तौर पर, शिक्षक जो कक्षा में भागीदारी और सहयोग को प्रोत्साहित करते हैं, भावना विनियमन के बारे में चर्चा शुरू करते हैं, स्पष्ट कक्षा नियम प्रदान करते हैं, और सम्मानजनक व्यवहार के लिए सकारात्मक रोल मॉडल होते हैं, वे बच्चों के सामाजिक और भावनात्मक कल्याण को बढ़ा सकते हैं। इसके अलावा, जिन शिक्षकों ने अपनी और बच्चों की भावनाओं के महत्व के बारे में जागरूकता बढ़ाई है, वे अपने कल्याण और शैक्षणिक उपलब्धि के लिए हैं, और कक्षा में इन मुद्दों को लगातार संबोधित करते हैं, उनका बच्चों के सामाजिक, भावनात्मक और संज्ञानात्मक विकास पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ सकता है। अर्थात्, सक्रिय सुनने, बच्चों की भावनात्मक, सामाजिक और शैक्षिक आवश्यकताओं के प्रति संवेदनशीलता और आपसी विश्वास और सहानुभूति के विकास के माध्यम से, शिक्षकों का बच्चों के सामाजिक और भावनात्मक कौशल को बढ़ाने पर एक शक्तिशाली प्रभाव पड़ता है। दूसरी ओर, जो शिक्षक आमतौर पर बच्चों की भावनाओं की गलत व्याख्या करते हैं, वे उनकी भावनात्मक स्थिति और सीखने की जरूरतों को गलत समझ सकते हैं, जो छात्रों के सामाजिक और भावनात्मक कल्याण और उनके शैक्षणिक परिणामों को गंभीर रूप से खतरे में डाल सकता है। इसलिए, छात्रों के सामाजिक और भावनात्मक कल्याण के लिए शिक्षकों का समर्थन 'शैक्षणिक सफलता प्राप्त करने के लिए महत्वपूर्ण माना जाता है।

अनिवार्य रूप से, जब बच्चे अपने आस-पास के वातावरण में सुरक्षित और सुरक्षित महसूस करते हैं, तो वे नए ज्ञान की खोज और अधिग्रहण के लिए आवश्यक जोखिम उठाएँगे। सुरक्षा और संरक्षा की भावना पोषण और सहायक वातावरण से उत्पन्न होती है जहाँ शिक्षक लगातार आधार पर बच्चों की सामाजिक और भावनात्मक आवश्यकताओं के प्रति संवेदनशीलता और देखभाल दिखाते हैं। जब बच्चों को उनकी ज़रूरत के अनुसार भावनात्मक सुरक्षा प्रदान की जाती है, जब वे अपने शिक्षक द्वारा स्वीकार किए जाते हैं, मूल्यवान और सराहे जाते हैं, तो विश्वास, साझा समझ और आपसी सम्मान पर आधारित एक सकारात्मक संबंध पैदा होगा। इस तरह के रिश्ते में, बच्चे 'बिना किसी डर या झिझक के अपनी भावनाओं, चिंताओं और दृष्टिकोणों को व्यक्त करने में सक्षम होते हैं'। इसके अलावा, जब शिक्षक बच्चों का सम्मान और मूल्यांकन करने में सक्षम होते हैं, तो वे उनके आत्म-सम्मान के विकास का भी समर्थन करते हैं। जिन बच्चों को उनके आत्म-सम्मान, भावना विनियमन कौशल और सामाजिक दक्षताओं को विकसित करने के लिए समर्थन दिया जाता है, वे आत्म-प्रेरित और स्वतंत्र शिक्षार्थी बनने में सक्षम होते हैं।

सकारात्मक शिक्षण वातावरण स्थापित करने के लिए, शिक्षकों को बच्चों की आवाज़ को ध्यान से सुनने और उनकी राय, ज़रूरतों और व्यक्तिगत रुचियों का सम्मान करने की ज़रूरत है। इसके अतिरिक्त, एक अच्छी तरह से नियोजित कक्षा दिनचर्या और विश्वसनीय संरचना प्रदान करके जो बच्चों को खोज करने और सीखने में आत्मविश्वास महसूस कराती है, छात्र 'अपने वातावरण पर कुछ नियंत्रण महसूस करना और अपने व्यवहार पर कुछ नियंत्रण को आंतरिक बनाना' शुरू कर सकते हैं। शोध निष्कर्षों के सारांश ने पुष्टि की कि सीखने का वातावरण जिसमें बच्चे अपने शिक्षकों और साथियों के साथ लगातार सकारात्मक बातचीत का अनुभव करने में सक्षम होते हैं, और उन्हें अपनी सीखने की प्रक्रिया की ज़िम्मेदारी लेने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है, कक्षा के कार्यों में उनकी संज्ञानात्मक भागीदारी में महत्वपूर्ण रूप से योगदान देता है। इस प्रकार, शिक्षक के शैक्षणिक दृष्टिकोण को इस तरह से संशोधित करना जो अधिक समावेशी, सार्थक और बच्चों की देखभाल करने वाला हो, कक्षा में सकारात्मक शिक्षण वातावरण बनाने की अधिक संभावना है। एक सकारात्मक कक्षा का माहौल बच्चों की सीखने की सुविधा प्रदान कर सकता है और उनकी शैक्षणिक क्षमता को बढ़ा सकता है।